Swami Vivekananda Essay in Hindi

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद एक महान हिंदू संत और नेता थे, जो आज भी भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा है। इन्होंने अपने ज्ञान के बलबूते देश विदेश तक भारतीय संस्कृति को फैलाया और भारत के प्रति लोगों के नजरिए को बदला।

स्वामी विवेकानंद का प्रारंभिक जीवन

विवेकानंद का जन्म पश्चिम बंगाल राज्य के कोलकाता शहर में 12 जनवरी 1863 को विश्वनाथ दत्त के यहां हुआ था। इनकी माता का नाम भुनेश्वरी देवी था। विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्र था। यह अपने 8 भाई बहनों में से एक थे।

इनके पिता पेशे से कोलकाता के उच्च न्यायालय में वकील के रूप में कार्य करते थे। इनकी माता धार्मिक प्रवृत्ति की थी। अपनी माता से इन्होंने आत्म नियंत्रण और आध्यात्मिकता से संबंधित काफी ज्ञान प्राप्त किया था। अपनी माता से ही इन्हें हिंदू धर्म और सनातन संस्कृति को करीब से समझने का मौका मिला था।

नरेंद्र की माता बचपन से इन्हें रामायण और महाभारत की कहानियां सुनाया करती थी। इसी कारण नरेंद्र को बचपन से ही आध्यात्मिकता के क्षेत्र में लगाव होने लगा था। जब भी वे इस तरह के धार्मिक कथाओं को सुनते तो उनका मन हर्षोल्लास से भर जाता और ध्यान मग्न हो जाते।

इनके पिता पाश्चात्य संस्कृति को काफी ज्यादा पसंद करते थे। जब तक इनके पिता जीवित थे, घर की स्थिति काफी सुख संपन्न वाली थी। इनके पिता हमेशा से ही नरेंद्र को पाश्चात्य संस्कृति के रंग में ढालना चाहते थे।

इसीलिए वे नरेंद्र को अंग्रेजी भाषा में शिक्षा दिलवाना चाहते थे। लेकिन नरेंद्र को अंग्रेजी भाषा से बिल्कुल लगाव नहीं था। हालांकि ये प्रतिभा के धनी थे, लेकिन इनका असली लक्ष्य तो आत्म शांति और परमात्मा प्राप्ति था।

स्वामी विवेकानंद की शिक्षा

विवेकानंद ने अपने प्रारंभिक शिक्षा स्कॉटिश चर्च कॉलेज और विद्यासागर कॉलेज से की। उसके बाद इन्होंने आगे की पढ़ाई के लिए कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए एंट्रेंस एग्जाम दिया, जिसमें विवेकानंद प्रथम स्थान पर आए थे।

यहां पर इन्होंने दर्शनशास्त्र से आगे की पढ़ाई पूरी की। हालांकि इसके अतिरिक्त इन्हें सामाजिक विज्ञान, कला, धर्म, साहित्य, इतिहास, संस्कृत और बंगाली साहित्य में भी बहुत दिलचस्पी थी।

स्वामी विवेकानंद की उनके गुरु से मुलाकात

स्वामी विवेकानंद को हमेशा से ही आत्मज्ञान चाहिए था और उन्हें इससे संबंधित कई तरह के प्रश्न थे, जिसके जवाब को पाने के लिए ब्राह्मण समाज के साथ जुड़े। लेकिन इन्हें वहां भी कोई जवाब नहीं मिला तब इन्होंने ब्रह्म समाज के नेता महा ऋषि देवेंद्रनाथ ठाकुर के द्वारा दक्षिणेश्वर के काली मंदिर के पुजारी रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा सुनी।

इन्होंने विवेकानंद को कहा कि उनके पास सभी तरह के प्रश्नों का उत्तर है। तब विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस को मिलने के लिए जाते हैं। पहली मुलाकात में ही विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस से पूछते हैं कि क्या आपने ईश्वर को देखा है?

दरअसल विवेकानंद से इस प्रश्न को कई लोगों ने पूछा था लेकिन उनके पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। इसीलिए वे रामकृष्ण परमहंस को यह प्रश्न पूछ कर उनके ज्ञान से बारे में अवगत होना चाहते थे।

विवेकानंद के प्रश्न पर रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें उत्तर दिया कि हां मैंने ईश्वर को देखा है, मैं तुम में ईश्वर देख सकता हूं। ईश्वर सभी के अंदर व्याप्त है। विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के इस उत्तर से संतुष्ट होते हैं। उनके मन को शांति मिल जाती है, जिसके बाद वे रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरु बना लेते हैं।

स्वामी विवेकानंद की यात्रा

स्वामी विवेकानंद ने मात्र 25 वर्ष की उम्र में अपना साधारण जीवन छोड़ सन्यासी जीवन को अपना लिया था। उससे पहले वे नरेंद्र के नाम से जाने जाते थे लेकिन सन्यासी जीवन ग्रहण करने के बाद ये स्वामी विवेकानंद कहलाए।

उसके बाद इन्होंने भारत दर्शन का निर्णय लिया और फिर निकल पड़े पैदल भारत दर्शन करने और भारतवर्ष की यात्रा करके उन्होंने भारत कि सनातन धर्म भारत की संस्कृति से पूरी तरीके से परिचित हुए।

स्वामी विवेकानंद और श्री रामकृष्ण परमहंस

सन 1893 में स्वामी विवेकानंद भारत के प्रतिनिधि के रूप में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म परिषद में गए थे और वहां पर उनके द्वारा दिया गया भाषण आज भी युवा पीढ़ी को प्रेरित करती है। शिकागो के भाषण के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति को पहली बार दुनिया के सामने रखा और हिंदुत्व धर्म से लोगों को परिचित कराया।

वहां पर विश्व के कई धर्मगुरु आए थे, जो अपने धर्म कीकिताबें लेकर गए थे। स्वामी विवेकानंद अपने साथ भागवत गीता लेकर गए थे। कहा जाता है कि यूरोप अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत तुच्छ नजर से देखते थे।

जिस कारण वहां पर स्वामी विवेकानंद की निंदा करने के लिए लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि उन्हें सम्मेलन में बोलने का ही मौका ना दिया जाए। लेकिन एक अमेरिकन प्रोफेसर स्वामी विवेकानंद ने अनुरोध किया कि उन्हें केवल दो ही मिनट चाहिए, उतने में ही वे अपने भाषण को पूरा कर लेंगे।

हालांकि वह प्रोफेसर आचार्य चकित रह गया कि इतने कम समय में ये कैसे अपने धर्म से लोगों को अवगत करा पाएंगे। लेकिन विवेकानंद के लिए इतना समय काफी था और इतने समय में उनके द्वारा बोले गये दो शब्द भाइयों और बहनों को ही सुनकर श्रोता गणों के तालियों की गड़गड़ाहट से सम्मेलन का भवन पूरी तरह गूंज उठा।

इस तरह उसके बाद स्वामी विवेकानंद ने वैदिक दर्शन का ज्ञान दिया, सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया और इस भाषण से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की एक नई छवि सामने आई।

इतना ही नहीं अमेरिका में स्वामी विवेकानंद लगभग 3 सालों तक रहे और 3 वर्षों तक वे वहां के लोगों में भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के बारे में जानकारी देते रहे। वहां पर उन्होंने रामकृष्ण मिशन की कई शाखाएं भी स्थापित की। इस तरह अमेरिका में भी कई अमेरिकन विद्वान विवेकानंद के शिष्य बने।

स्वामी विवेकानंद का शिकागो भाषण

धर्म के नाम पर कट्टरता की भावना रखने वाले संप्रदायिक लोगों के ली विवेकानंद ने कहा था कि जिस तरह भिन्न भिन्न नदियां अंत में एक समुद्र में ही जाकर मिल जाती है, ठीक उसी तरह विश्व की जितनी भी धर्म है, अंत में वह ईश्वर तक ही पहुंचती है। इसीलिए धर्म के नाम पर कट्टरता की भावना को त्याग कर सौहार्द और भाईचारा की भावना रखनी चाहिए तभी विश्व और मानवता का विकास हो सकता है।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना

रामकृष्ण परमहंस के शरण में आने के बाद स्वामी विवेकानंद ने अपना पूरा जीवन उनके सेवा में समर्पित कर दिया। अंत समय में रामकृष्ण परमहंस कैंसर जैसी भयानक बीमारी से ग्रसित हो गए और ऐसे स्थानों में स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु की बहुत देखभाल की।

जब उनकी मृत्यु हो गई तब उन्होंने अपने गुरु को समर्पित रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो बाद में रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन के नाम से जाना गया। इस मिशन की

स्थापना इन्होंने 1 मई 1998 में की थी, जिसका लक्ष्य नए भारत का निर्माण करना था। इस मिशन के तहत कई स्कूल, कॉलेज और अस्पताल का निर्माण किया गया। विवेकानंद ने इसके बाद बेलूर मठ की स्थापना की।

स्वामी विवेकानंद की मृत्यु

स्वामी विवेकानंद युवाओं को हमेशा शारीरिक मजबूती पर जोर देने के लिए कहते थे। उनका मानना था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। इसीलिए गीता पढने से अच्छा फुटबॉल खेलना है।

लेकिन कहा जाता है कि अंत समय में स्वामी विवेकानंद खुद भी एक बीमारी से ग्रसित हो गए थे, जिस कारण मेरठ के मठ में 4 जुलाई 1902 को मात्र 39 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई।

निष्कर्ष

विवेकानंद एक ऐसे महान और विद्वानों संत थे, जिन्होंने अपने ज्ञान और शब्दों के द्वारा विश्व भर में हिंदू धर्म के विषय में लोगों का नजरिया ही बदल दिया। स्वामी विवेकानंद ने सभी को सच्चे धर्म की व्याख्या करते हुए कहा था कि सच्चा धर्म वह होता है, जो भूखे को अन्न दें, दुनिया के दुखों को दूर करें।

यहां तक कि विवेकानंद ने स्वयं समाज के लोगों के बीच रहते हुए समाज में व्याप्त कुप्रथा को खत्म करने का प्रयास किया। स्वामी विवेकानंद ने अपने ज्ञान के बलबूते एक ऐसी मशाल को प्रज्वलित की, जो सदैव आलौकिक रहेगा और जीवन पर्यंत वे अमर रहेंगे, उनके विचार अमर रहेंगे।

Download All Type PDF: https://pdfseva.com/